# ऋग्वेद मण्डल ६ सूक्त १ | Rigveda Manḍala 6 Sukta 1

भरद्वाजो बार्हस्पत्य ऋषि: | अग्निर्देवता

| छन्द: | |
|---|---|
| १, ७, १३ | भुरिक् पङ्क्तिः |
| २ | स्वराट् पङ्क्तिश् |
| ५ | पङ्क्तिश् |
| ३, ४, ६, ९, ११, १२ | निचृत् त्रिष्टुप् |
| ८, १० | त्रिष्टुप् |

| स्वर: | |
|---|---|
| १, २, ५, ७, १३ | पञ्चम: |
| ३, ४, ६, ८ -१२ | धैवत: |

bharadvaajo baarhaspatya riṣhiḥ. agnirdevataa

| Chhandaḥ | |
|---|---|
| 1, 7, 13 | bhurik paṅktiḥ |
| 2 | svaraaṭ paṅktish |
| 5 | paṅktish |
| 3, 4, 6, 9, 11, 12 | nichrit triṣhṭup |
| 8, 10 | triṣhṭup |

| Swaraḥ | |
|---|---|
| 1, 2, 5, 7, 13 | pañchamaḥ |
| 3, 4, 6, 8 -12 | dhaivataḥ |
| | |
| | |
| | |

**त्वं ह्यग्ने प्रथमो मनोतास्या धियो अभवो दस्म होता ।**
**त्वं सीं वृषन्नकृणोर्दुष्टरीतु सहो विश्वस्मै सहसे सहध्यै ॥ १ ॥**

त्वम् हि अग्ने प्रथम: मनोता अस्या: धिय: अभव: दस्म होता ।
त्वम् सीम् वृषन् अकृणो: दुस्तरीतु सह: विश्वस्मै सहसे सहध्यै ॥

1. **Om tvam hy-agne prathamo manota-asyaa dhiyo abhavo dasma hotaa. tvan seem vriṣhann-akriṇor-duṣhṭareetu saho vishvasmai sahase sahadhyai**

**अधा होता न्यसीदो यजीयानिळस्पद इषयन्निड्य: सन् ।**
**तं त्वा नर: प्रथमं देवयन्तो महो राये चितयन्तो अनु ग्मन् ॥ २ ॥**

अध होता नि असीद: यजीयान् इळ: पदे इषयन् ईड्य: सन् ।
तम् त्वा नर: प्रथमम् देवऽयन्त: मह: राये चितयन्त: अनु ग्मन् ॥

2. **Om adhaa hotaa ny-aseedo yajeeyaan-iḷas-pada iṣhayann-iḍyaḥ san. tan tvaa naraḥ prathaman deva-yanto maho raaye chitayanto anu gman**

**वृतेव यन्त बहुभिर्वसव्यै३ऽस्त्वे रयिं जागृवांसो अनु ग्मन् ।**

**रुशन्तमग्निं दर्शतं बृहन्तं वपावन्तं विश्वहा दीदिवांसम् ॥ ३ ॥**

वृताऽइव यन्तम् बहुऽभिः वसव्यैः त्वे इति रयिम् जागृऽवांसः अनु ग्मन् ।

रुशन्तम् अग्निम् दर्शतम् बृहन्तम् वपाऽवन्तम् विश्वहा दीदिऽवांसम् ॥

3. **Om vrit-eva yantam bahu-bhir-vasavyai 3 s-tve rayiñ jaagri-vaanso anu gman. rushantam-agnin darshatam brihantam vapaa-vantam vishvahaa deedi-vaansam**

**पदं देवस्य नमसा व्यन्तः श्रवस्यवः श्रव आपन्नमृक्तम् ।**

**नामानि चिद्दधिरे यज्ञियानि भद्रायां ते रणयन्त संदृष्टौ ॥ ४ ॥**

पदम् देवस्य नमसा व्यन्तः श्रवस्यवः श्रवः आपन् अमृक्तम् ।

नामानि चित् दधिरे यज्ञियानि भद्रायाम् ते रणयन्त सम्ऽदृष्टौ ॥

4. **Om padan devasya namasaa vyantaḥ shravasyavaḥ shrava aapann-amriktam. naamaani chid-dadhire yajñiyaani bhadraayaan te raṇayanta san-drishṭau**

**त्वां वर्धन्ति क्षितय पृथिव्यां त्वां राय उभयासो जनानाम् ।**

**त्वं त्राता तरणे चेत्यो भूः पिता माता सदमिन्मानुषाणाम् ॥ ५ ॥**

त्वाम् वर्धन्ति क्षितयः पृथिव्याम् त्वाम् रायः उभयासः जनानाम् ।

त्वम् त्राता तरणे चेत्यः भूः पिता माता सदम् इत् मानुषाणाम् ॥

5. **Om tvaam vardhanti kṣhitaya prithivyaan tvaaṇ raaya ubhayaaso janaanaam. tvan traataa taraṇe chetyo bhooḥ pitaa maataa sadamin-maanuṣhaaṇaam**

**सपर्येण्य स प्रियो विक्ष्व१ग्निर्होता मन्द्रो नि षसादा यजीयान् ।**

**तं त्वा वयं दम आ दीदिवांसमुपजुबाधो नमसा सदेम ॥ ६ ॥**

सपर्येण्यः सः प्रियः विक्षु अग्निः होता मन्द्रः नि ससाद यजीयान् ।

तम् त्वा वयम् दमे आ दीदिऽवांसम् उप जुऽबाधः नमसा सदेम ॥

6. **Om saparyeṇya sa priyo vikṣhva1gnir-hotaa mandro ni ṣhasaadaa yajeeyaan tam tvaa vayan dama aa deedi-vaansam-upa-jñu-baadho namasaa sadema**

**त्वं त्वा वयं सुध्यो३ नव्यमग्ने सुम्नायव ईमहे देवयन्तः ।**

**त्वं विशो अनयो दीद्यानो दिवो अग्ने बृहता रोचनेन ॥ ७ ॥**

तम् त्वा॒ व॒यम् सु॒ऽध्य॑: नव्य॑म् अ॒ग्ने॒ सु॒म्न॒ऽयव॑: ई॒म॒हे॒ दे॒व॒ऽयन्त॑: ।
त्वम् विश॑: अ॒न॒य॒: दीद्या॑न: दि॒व: अ॒ग्ने॒ बृ॒ह॒ता रो॒च॒नेन॑ ॥

7. **Om tan tvaa vayan sudhyo3 navyam-agne sumnaa-yava eemahe deva-yantaḥ. tvam visho anayo deedyaano divo agne brihataa rochanena**

**वि॒शां क॒विं वि॒श्पति॒ं शश्व॑तीनां नि॒तोश॑नं वृष॒भं च॑र्षणी॒नाम् ।**
**प्रेती॑षणिमि॒षय॑न्तं पाव॒कं राज॑न्तम॒ग्निं य॑जतं॒ र॑यी॒णाम् ॥ ८ ॥**

वि॒शाम् क॒विम् वि॒श्पति॑म् शश्व॑तीनाम् नि॒ऽतोश॑नम् वृ॒ष॒भम् च॒र्ष॒णी॒नाम् ।
प्रेति॑ऽइषणिम् इ॒षय॑न्तम् पा॒व॒कम् राज॑न्तम् अ॒ग्निम् य॒ज॒तम् र॒यी॒णाम् ॥

8. **Om vishaaṅ kavim vishpatiñ shashvateenaan ni-toshanam vriṣhabhañ charṣhaṇeenaam. Prete-eṣhaṇim-iṣhayantam paavakaṇ raajantam-agni yajataṇ rayeeṇaam**

**सो अ॑ग्न ईजे शश॒मे च॒ मर्तो॒ यस्त॒ आन॑ट् स॒मिधा॑ ह॒व्यदा॑तिम् ।**
**य आहु॑तिं॒ परि॒ वेदा॒ नमो॑भि॒र्विश्वेत्स वा॒मा द॑धते॒ त्वोत॑: ॥ ९ ॥**

स: अ॒ग्ने॒ ई॒जे॒ श॒श॒मे च॒ मर्त॑: य: ते॒ आन॑ट् स॒म्ऽइधा॑ ह॒व्यऽदा॑तिम् ।
य: आऽहु॑तिम् परि॑ वेद॑ नम॑:भि: विश्वा॑ इत् स: वा॒मा द॒ध॒ते॒ त्वाऽऊ॑त: ॥

9. **Om so agna eeje shashame cha marto yasta aanaṭ samidhaa havya-daatim. ya aahutim pari vedaa namo-bhir-vishvet-sa vaamaa dadhate tvotaḥ**

**अ॒स्मा उ॑ ते॒ महि॑ म॒हे वि॑धेम॒ नमो॑भिरग्ने स॒मिधो॒त ह॒व्यै: ।**
**वेदी॑ सूनो सहसो गी॒र्भिरु॒क्थैरा ते॑ भ॒द्राया॑ सुम॒तौ य॑तेम ॥ १० ॥**

अ॒स्मै ऊँ॒ इति॑ ते॒ महि॑ म॒हे वि॒धे॒म॒ नम॑:ऽभि: अ॒ग्ने॒ स॒म्ऽइधा॑ उत ह॒व्यै: ।
वेदी॑ सू॒नो॒ इति॑ स॒ह॒स॒: गी॒ऽभि: उ॒क्थै: आ ते॒ भ॒द्राया॑म् सु॒म॒तौ य॒ते॒म॒ ॥

10. **Om asmaa u te mahi mahe vidhema namo-bhir-agne sam-idhota havyaiḥ vedee soono sahaso geer-bhir-ukthair-aa te bhadraayaan sumatau yatema**

**आ यस्त॒तन्थ॒ रोद॑सी॒ वि भा॒सा श्रवो॑भिश्च श्रव॒स्य१॒॑स्तरु॑त्र: ।**
**बृह॒द्भिर्वाजै॒: स्थवि॑रेभिर॒स्मे रे॒वद्भि॑रग्ने वित॒रं वि भा॑हि ॥ ११ ॥**

आ य: त॒तन्थ॑ रोद॑सी॒ इति॑ वि भा॒सा श्रव॑:ऽभि: च॒ श्रव॒स्य॑: तरु॑त्र: ।

बृहत्ऽभिः वाजैः स्थविरेभिः अस्मे इति रेवत्ऽभिः अग्ने विऽतरम् वि भाहि ॥

**11. Om aa yas-tatantha rodasee vi bhaasaa shravo-bhish-cha shravasya1s-tarutraḥ. Brihad-bhir-vaajaiḥ sthavirebhir-asme revad-bhir-agne vi-taram vi bhaahi**

**नृवद्वसो सदमिद्धेह्यस्मे भूरि तोकाय तनयाय पश्वः ।**

**पूर्वीरिषो बृहतीरारेअघा अस्मे भद्रा सौश्रवसानि सन्तु ॥ १२ ॥**

नृऽवत् वसो इति सदम् इत् धेहि अस्मे इति भूरि तोकाय तनयाय पश्वः ।

पूर्वीः इषः बृहतीः आरेऽअघाः अस्मे इति भद्रा सौश्रवसानि सन्तु ॥

**12. Om nri-vad-vaso sadam-id-dhehy-asme bhoori tokaaya tanayaaya pashvaḥ. Poorveer-iṣho brihateer-aare-aghaa asme bhadraa saushravasaani santu**

**पुरूण्यग्ने पुरुधा त्वाया वसूनि राजन्वसुता ते अश्याम् ।**

**पुरूणि हि त्वे पुरुवार सन्त्यग्ने वसु विधते राजनि त्वे ॥ १३ ॥**

पुरूणि अग्ने पुरुधा त्वाऽया वसूनि राजन् वसुता ते अश्याम् ।

पुरूणि हि त्वे इति पुरुऽवार सन्ति अग्ने वसु विधते राजनि त्वे इति ॥

**13. Om purooṇy-agne purudhaa tvaa-yaa vasooni raajan-vasutaa te ashyaam. purooṇi hi tve puru-vaara santy-agne vasu vidhate raajani tve**